ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-2*March (Supplementary Issue)-2018
Innovation The Research Concept

संचार क्रान्ति : हिन्दी एवं हाइकु कविता जगत में

संगीता पाण्डेय 'संगिनी'
सहायक प्रोफेसर ,
हिन्दी विभाग,
पं0 सुन्दर लाल मेमोरियल स्नातकोत्तर महाविद्यालय
कन्नौज

सारांश

मनुष्य ब्रह्मा की सृष्टि का श्रेष्ठतम प्राणी है। प्रगति के पथ पर मानव निरन्तर गतिशील रहते हुए बहुत दूर चला आया है। जीवन के हर क्षेत्र में कई मुकाम हासिल किए हैं। आज संसार मनुष्य की मुट्ठी में कैद हो गया है। जीवन के क्षेत्रों में सबसे अधिक क्रान्तिकारी कदम संचार क्षेत्र में उठाए गए हैं।

मुख्य शब्द : संचार क्रान्ति, क्रान्तिकारी

प्रस्तावना

वर्तमान दौर संचारक्रान्ति का है। संचार क्रान्ति की इस प्रक्रिया में जन संचार माध्यमों के भी आयाम बदले हैं। आज वैश्विक अवधारणा के अन्तर्गत सूचना एक अस्त्र के रूप में परिवर्तित हो गई है, सूचना जगत गतिशील हो गया है, मनुष्य की उपलब्धियों नें विश्व की दूरियों को समेटकर बहुत छोटा कर दिया है। भूमण्डलीकरण के दौर में वर्तमान जीवन का कोई पहलू, कोई भी कोना अछूता नहीं रहा। भूमण्डलीकरण की प्रक्रिया अपनें साथ संचार क्रान्ति लेकर आया। किसी भी भाषा के विकास और प्रचार प्रसार में संचार माध्यमों का विशिष्ट योगदान रहा है। हिन्दी इसका अपवाद नहीं है। भूमण्डलीकरण नें भारत में अपना पॉव फैलाया। वर्तमान में रेडियो, टेलीवीजन, कम्प्यूटर, इंटेरनेट, मोबाइल, ई–मेल के माध्यम से संचार माध्यमों का क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है। इनके माध्यम से नई हिन्दी गढ़ी जा रही है। जिसमें रचना शीलता कम एवं व्यवसायिकता अधिक झलकती है। जन संचार माध्यमों प्रिन्ट, दृश्य और श्रृव्य की भूमिका हिन्दी के प्रचार प्रसार में सदा से महत्वपूर्ण रही है। प्रिन्ट मीडिया का इतिहास भी काफी पुराना है। स्वाधीनता आन्दोलन के समय हिन्दी भाषा में प्रकाशित पत्र पत्रिकाओं ने देश को आजाद करानें की पृष्ठ भूमि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार में अपूर्व योगदान दिया। यहॉ के लोक कवियों, साहित्यकारों नें हिन्दी भाषा में अपनी रचनाएँ जन–जन तक पहुॅचा कर हिन्दी के विकास में योगदान दिया। स्वाधीनता काल की प्रकाशित पत्रिका 'सरस्वती' 'मार्तण्डय' आदि के सक्रिय योगदान को देखा जा सकता है। हिन्दू, आज, आर्यावर्त, सन्मार्ग, नवज्योति, हिन्दुस्तान, विश्वमित्र, नवभारत, जैसे अनेकानेक हिन्दी दैनिक समाचार पत्रों नें हिन्दी के विकास में अहम् भूमिका निभायी वह अविस्मरणीय है।

आज हिन्दी अभिव्यक्ति की सबसे सशक्त माध्यम बन गई है। जन संचार के सभी माध्यमों में हिन्दी नें अपनी मजबूत पकड़ बना ली है। चाहे वह हिन्दी समाचार पत्र हो, रेडियो हो, दूरदर्शन हो, हिन्दी सिनेमा हो या विज्ञापन हो, चहुॅओर हिन्दी ही दिखाई देती है। वर्तमान समय में हिन्दी को वैश्विक सन्दर्भ प्रदान करनें में, उसके बोलनें वालों की संख्या, हिन्दी चलचित्र, पत्र–पत्रिकाएँ, विभिन्न हिन्दी चैनल, विज्ञापन ऐजेन्सियॉ, हिन्दी का विश्व स्तरीय साहित्य एवं साहित्यकार आदि का विशेष योगदान है। इसके अतिरिक्त एक विशेष बात और भी मैं बताना चाहती हूॅ कि हिन्दी को विश्वभाषा बनानें में इंटरनेट की भूमिका भी अति महत्वपूर्ण है। हिन्दी चैनलों की संख्या निरन्तर वृद्धि कर रही है। बाजार की स्पर्धा के कारण ही सही, अंग्रेजी चैनलों का हिन्दी में रूपान्तरण हो रहा है आज के समय में हिन्दी में भी एक लाख से भी ज्यादा ब्लॉग सक्रिय हैं। अब सैकड़ो पत्र–पत्रिकाएँ इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। इंटरनेट नें आज पत्रिकारिता को भी बहुआयामी बना दिया है। आज कोई भी जानकारी पलक झपकते उपलब्ध हो जाती है। मीडिया आज काफी सशस्त, स्वतन्त्र और प्रभावशाली हो गया है। यदि मोबाइल और कम्प्यूटर की संचार क्रान्ति में चर्चा न की जाए तो बात पूरी नही होगी। ये ऐसे माध्यम हैं जिन्होनें पूरी दुनिया को अपनी मुट्ठी में कैद कर लिया है। सूचना, समाचार और संवाद प्रेषण के लिए हिन्दी को विकल्प के रूप में विकसित करके संचार तकनीक को समृद्ध किया, साथ ही हिन्दी को भी समृद्धशाली बनाया है। इसी तरह इंटरनेट और बेवसाइट की सुविधा नें पत्र–पत्रिकाओं के ई–संस्करण तथा पूर्णतः ऑनलाइन पत्र–पत्रिकाएँ उपलब्ध कराकर

नई दुनिया का द्वार खोल दिया है। आज हिन्दी की पत्र–पत्रिकाएँ विश्व में कहीं भी सुलभ हो गई हैं।

हिन्दी के वैश्विक स्वरूप को संचार माध्यमों मे भी देखा जा सकता है। भाषाएँ संस्कृति की वाहक होती हैं। डिजिटल की दुनिया में हिन्दी की मॉग अंग्रेंजी की तुलना में पॉच गुना ज्यादा तेज है। भारत में हर पॉचवा इण्टरनेट प्रयोगकर्ता हिन्दी का प्रयोग करता है। आज 'स्माटफोन' के रूप मे हर एक के पास एक तकनीकी डिवाइस उपलब्ध और उसमें हिन्दी। सभी आपरेटिंग सिस्टमों में हिन्दी में संदेश भेजना हिन्दी की सामग्री को पढ़ना, सुनना एवं देखना बहुत ही आसान है। भारतीयों मे हिन्दी के प्रति रूचि बढ़ी है। भारत में 50 करोड़ से भी ज्यादा लोग हिन्दी बोलते हैं। जबकि करीब 21 % भारतीय हिन्दी में इंटरनेट का प्रयोग करते हैं। भारतीय युवाओं के स्मार्टफोन में औसतन 32 ऐप होते हैं। जिसमें 8–9 हिन्दी के होते हैं। भारतीय युवा यूट्यूब पर 93 फीसद हिन्दी वीडियो देखते हैं।

हिन्दी की अनेकानेक विधाओं में 'हाइकु' भी नूतन काव्य–विधा है। हाइकु मूलतः जापानी साहित्य की काव्य–विधा है। हाइकु को काव्य–विधा के रूप में 'मात्सुओ वाशो' नें प्रतिष्ठित किया। वाशो के हाथों सज सॅवरकर 17वीं शताब्दी में जीवन दर्शन से अनुप्राणित होकर ये जापानी कविता युगधारा के रूप में प्रस्फुटित हुई। आज हाइकु जापानी सीमाओं को लॉधकर विश्व–साहित्य की निधि बन चुका है। हाइकु अनुमति के चरमक्षण की कविता है। सौन्दर्यानुभूति अथवा भावानुभूति के चरम क्षण की अवस्था में विचार, चिन्तन और निष्कर्ष आदि प्रक्रियाओं का भेद समाप्त हो जाता है। अनुभूति का यह चरम क्षण हाइकु कवि का लक्ष्य होता है।

हाइकु के बारे में प्रो0 नामवर सिंह का कथन है कि–''हाइकु एक संस्कृति है,जीवन पद्धति है, तीन पंक्तियों के लधुगीत, अपनी सरलता, सहजता, संक्षिप्तता के लिए जापानी साहित्य में विशेष स्थान रखते हैं। इसमें एक भाव–चित्र बिना किसी टिप्पणी के, बिना किसी अलंकार के प्रस्तुत किया जाता है। यह भाव–चित्र अपनें आप में पूर्ण होता है।'' [1] गुजराती कवि स्नेहरश्मि जी नें हाइकु को 17 अक्षरों की फूलों की पंखुडियॉ माना है। श्री कमलेश भट्ट 'कमल' हाइकु को 21वीं सदी की कविता की संज्ञा देते हैं। डॉ–शम्भूशरण द्विवेदी 'बन्धु' का विचार है कि–'हाइकु का मूल वैदिक छन्दों में मिलता है। 'त्रिशूल' के माध्यम से पुरातन भारतीय 'गायत्रीछन्द' जिसे जापान तक हमारे ऋषि मुनियों एवं सन्तों नें पहुॅचाया और वहॉ पहुॅचकर इतना लोकप्रिय हुआ कि आज संसार 'हाइकु' और 'सेनेर्यू' के रूप में उसे जापानी छन्द की संज्ञा को दे बैठा है।'[2] डॉ0 गिरजा शंकर त्रिवेदी भी हाइकु का बीज भारतीय साहित्य को ही मानते हैं। भारतीय हाइकु में इस लधु रचना का आदर्श रूप विधमान है। वस्तुतः कविता जितनी छोटी है उसमें अर्थक्ता और संवेदनशीलता उतनी ही गहरी होती है।

भारत में हाइकु का आगमन बंगला कवि नोबेल पुरस्कार विजेता रविन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा हुआ। नोबेल पुरस्कार प्राप्त करनें के बाद वे जापान यात्रा पर गये और वहॉ वह जापानी काव्य–विधा हाइकु के प्रति आकृष्ट हुए। सन् 1919 ई0 में अपनी जापान यात्रा से लौटनें के पश्चात 'जापानी–यात्री' में सर्वप्रथम हाइकु का परिचय देते हुए दो जापानी हाइकुओं का बंगला में अनुवाद प्रस्तुत किया। इन्हें भारतीय धरती पर अवतरित प्रथम हाइकु के रूप में जाना जाता है –

'पुरानों पुकुर
व्यांगेर लाफ
जलेर शब्द।
पचा डाल
एकटा को
शरत्काल।

दोनों ही अनुवाद शाब्दिक है और जापानी हाइकुकार 'वाशो' की प्रसिद्ध कविताओं के हैं।'[3]

टैगोर के 'क्षणिका' नामक काव्य–संग्रह को उनकी लधु रचनाओं का प्रतिनिधि काव्य–संकलन माना जाता है परन्तु टैगोर की वास्तविक लधु कविताओं का संकलन 'स्फुलिंग' है जो हाइकु का भारतीय रूप कहा जा सकता है जैसे –

'पुष्पेर मुकुल
निये आशे अरण्येर
आश्वास विपुल।[4]

रविन्द्रनाथ ठाकुर के पश्चात् भारत में हिन्दी हाइकु की चर्चा करनें का श्रेय प्रयोगों के पुरोधा प्रख्यात् साहित्यकार प0 सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन 'अज्ञेय' को जाता है। सन् 1959 ई0 में प्रकाशित 'अज्ञेय' के कविता–संग्रह 'अरी ओ करूणा प्रभामय में' सर्वप्रथम हाइकु की अनुगूॅज सुनाई देती है। 'अरी ओ करूणा प्रभामय' के 'एक चीड़ का खाका' खण्ड में जापानी भाषा के '27 हाइकुओं का अनुवाद है तथा 'रूपकेकी' खण्ड में अज्ञेय जी द्वारा रचित उनके मौलिक हाइकु हैं। अज्ञेय ने हाइकु के शास्त्रीय रचना विधान को नहीं वरन् उसकी शैली को अपनाया। इसी संग्रह में कुछ स्वतन्त्र हाइकु रचनाएँ भी है, जो हाइकु काव्य शैली से प्रभावित हैं : यथा –

'उड़ गई चिड़िया
कॉपी, फिर
थिर हो गई पत्ती।[5]

दूसरा अप्रतिम योगदान अनुवादक के रूप में प्रभाकर माचवे का है। अज्ञेय के समकालीन कवि भी हाइकु शैली में कविताएँ लिखते रहे। केदारनाथ अग्रवाल, 'केदारनाथ 'कोमल', श्रीकान्त वर्मा, डॉ0 वचनदेव कुमार, डॉ0 हरिवंश रायबच्चन, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, भवानी प्रसाद मिश्र आदि उल्लेखनीय है। छठे दशक में अज्ञेय नें हाइकु पर सर्वप्रथम प्रयोग किया। 7वें दशक में हाइकु अनुवाद यंत्र तंत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित होनें लगे। तत्पश्चात् हाइकु को एक आन्दोलन के रूप में उठानें का प्रयत्न रीवॉ के आदित्य प्रताप सिंह नें किया। उन्होंने स्वयं भी हाइकु एवं सेनेरयू की रचना की। उनकी कविताओं में हाइकु के शब्द संयम का विधानमिलता है

'ऊॅट मेमना
दूर क्षितिज पर
जुड़े बादल।[6]

सन् 1975 ई0 में 'नया प्रतीक' अक्टूबर अंक प्रकाशित होनें के साथ हाइकु के विकास का द्वितीय चरण प्रारंभ हुआ। तत्पश्चात् 1977 ई0 में डॉ0 सत्यभूषण वर्मा की 'जापानी–कविताएँ' पुस्तक प्रकाशित हुई। सन् 1978 में 'हाइकु–क्लब' की स्थापना हुई और डॉ0 सत्यभूषण वर्मा नें एक नियमित 'अन्तर्देशीय–पत्र' का प्रकाशन किया यह भारत में ही नहीं विश्व में लोकप्रिय हुआ। इस पत्र के माध्यम से अनेक हाइकुकार प्रकाश में आए–डॉ0 कमल किशोर गोयनका, मोतीलाल जोतवानी, सत्यपाल चुघ, पद्मा सचदेवा, कमलारत्नम् डॉ0 सावित्री आभा, डॉ0 पुरषोत्तम 'सत्यप्रेमी' मोहन कात्याल, सत्यानन्द जावा, डॉ0 सतीश दुबे, देवकी अग्रवाल, डॉ0 शैल रस्तोगी, शैल सक्सेना, उर्मिला कौल, वेदज्ञ आर्य, डॉ0 विधा बिन्दु सिंह, राधेश्याम, इत्यादि। तदुपरान्त सन् 1983 में डॉ0 वर्मा की दूसरी पुस्तक 'जापानी हाइकु और आधुनिक जापानी कविता' प्रकाशित हुई। इस 'शोध परक ग्रन्थ' पर डॉ0 वर्मा को डी0लिट0 की उपाधि से भी अलंकृत किया गया। इस पुस्तक के माध्यम से भारतीय हाइकुकार हाइकु के मर्म को समझे। अनेक भ्रान्तियों का निराकरण हुआ। इसी ग्रन्थ के माध्यम से हिन्दी में हाइकु का निश्चित वर्णक्रम 5–7–5 स्थापित हो सका। इसके पश्चात हाइकु निरन्तर प्रगतिशील होता जा रहा है। हिन्दी एवं हिन्दीतर भाषाओं में भी हाइकु कवियों एवं हाइकु काव्य संकलन की बाढ़ सी आ गई है।

डॉ0 भगवत शरण अग्रवाल द्वारा रचित 'शाश्वत–क्षितिज' (1985 ई0) हिन्दी का प्रथम प्रकाशित हाइकु–संग्रह है। लेकिन भारतीय भाषाओं में सर्वप्रथम हाइकु के नियमों को अपनाते हुए, मौलिक हाइकु गुजराती भाषा के विद्वान कवि 'स्नेहरश्मि' ने लिखे। जो उनके काव्य संग्रह 'सोनेरी चॉद रूपेरी सूरज' में प्रकाशित हुए –

भूली मैं चंदा
मोगरानी कुंज मॉ
ओढ़नी एनी। [7]

'शाश्वत–क्षितिज' हिन्दी का प्रथम हाइकु संग्रह है। अग्रवाल जी के हाइकुओं में मौलिकता, भावाभिव्यकि शिल्पगत वैशिष्ट्य देखने को मिलता है। 'टुकड़े–टुकडे आकाश, अकह, अर्ध्य आदि उनके हाइकु संग्रह हैं यह हाइकु वैज्ञानिकता की ओर संकेत करता है–

'सुन ! बच्चे भी
पैदा करेंगे अब
कम्प्यूटर। [8]

डॉ0 अग्रवाल के साथ–साथ अनेक हाइकुकारों के हाइकु–संग्रह प्रकाशित हुए। इनमें डॉ0 सुधा गुप्ता (खुशबू का सफर) डॉ0 शैल रस्तोगी (प्रतिबिम्बित तुम) गोविन्द नारायण मिश्र (त्रिवेणी) रमेश कुमार त्रिपाठी (मनके बोल) लक्ष्मण प्रसाद नायक (हाइकु–575) डॉ0 मिथिलेश दीक्षित (स्वर विविध क्षण बोध के, प्रतिबिम्ब) आदि। 1989 ई0 में हिन्दी हाइकु के विकास में एक और अध्याय जुड़ा। हिन्दी का प्रथम प्रतिनिधि 'हाइकु–1989 संकलन प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक श्री कमलेश भट्ट 'कमल' और श्री रामनिवास 'पंथी' जैसे साहित्यकार है। इस सग्रह में 30 हाइकु कवियों की चुनी हुई 210 हाइकु कविताएँ हैं। इनमें डॉ0 जीवन प्रकाश जोशी, कमल किशोर गोयनका, डॉ0 सावित्री डागा, डॉ0 विधा बिन्दु सिंह, डॉ0 मोतीलाल जोतवाणी स्नेह रश्मि, सत्यानन्द जावा, डॉ सत्यपाल चुघ, शैल सक्सेना, श्याम निर्मम, सतीश राठी, पुरषोत्तम 'सत्यप्रेमी' शंम्भू शरण 'बन्धु', रामनिवास पंथी, कमलेश भट्ट 'कमल' आदि।

सन् 1989 में डॉ0 सत्यभूषण वर्मा के निर्देशन में हाइकु पर एक डाक्यूमेन्ट्री फिल्म का भी निर्माण किया गया।

सन् 1990 के पश्चात् हिन्दी में हाइकु के कुछ नवीन संग्रह भी प्रकाशित हुए। जिनमें सुरेश कुमार कृत 'जैसे ओस कहानी' (1991) डॉ0 मनोज सोनकर का 'चितकबरी' (1992) शंम्भू शरण द्विवेदी कृत 'त्रिशूल' (1995) डॉ0 भगवत् शरण अग्रवाल का 'अकह' (1994) उर्मिला कौल का 'अनुभूति' (1995) रमेश कुमार त्रिपाठी का 'अनुभूति कलश' (1995) डॉ0 भगवत शरण अग्रवाल के दो हाइकु–संग्रह 'अर्ध्य' (1995) 'सबरस' (1997) आदि प्रमुख हैं।

'अर्ध्य' डॉ0 अग्रवाल की अद्भुत और अनूठी कृति है। इसमें 65 हाइकुओं का 18 भारतीय भाषाओं सहित एवं अन्तर्राष्ट्रीय भाषाओं सहित मिलाकर 25 भाषाओं में अनुवाद हुआ है। किसी भी रचना का एक साथ इतनी भाषाओं में अनुवाद शायद ही अभी तक हुआ हो। एक उदृरण प्रस्तुत है–

पूर्ण में पूर्ण
जोड़ा, घटाया, गुना
पूर्ण ही रहा। [9]

सन् 1999 ई0 में कमलेश भट्ट 'कमल' नें पुनः 'हाइकु–1999' का सम्पादन किया। इस संकलन में 40 कवियों की हाइकु–कविताएँ प्रकाशित हुई। जो हाइकु की सूक्ष्म और गहन भावनाओं से अनुप्राणित हैं। डॉ0 मिथिलेश दीक्षित के इस हाइकु में मॉ का विराट रूप चित्रित हुआ है–

'तुम ही हो मॉ।
तुमसे बढ़कर कौन
नहीं उपमा। [10]

डॉ0 सुधा गुप्ता के इस हाइकु में प्रकृति के बदलते स्वरूप की झलक विधमान है–

फूलों की टोपी
हरियाली का कुर्ता
दूल्हा बसन्त। [11]

जिनकी रचनाएँ 'हाइकु–1999' में प्रकाशित हुई। उनमें डॉ0 नलिनी कान्त, मुकेश रावल, डॉ0 मिथिलेश दीक्षित, गोपाल जैन, आदित्य प्रताप सिंह, डॉ0 सुरेन्द्र वर्मा, डॉ0 मनोज सोनकर, डॉ0 सतीश दुबे, सूर्य देव पाठक, 'पराग', पारस दासोत, अशोक आनन, सुरेश कुमार, डॉ0 बिन्दु जी महाराज, अशेष बाजपेई, डॉ0 सन्तोष चौधरी, सुनील कुमार 'सजल, अजय चरणम्, नित्यानन्द तुषार, प्रो0 राम नारायण पटेल आदि उल्लेखनीय हैं। जिन्होंने हाइकु काव्य लेखन को विकसित एवं समृद्ध करनें में महती भूमिका अदा की है।

बदलते समय के साथ कविता सिर्फ 'स्वान्तः सुरवाय' नहीं रह गयी व्यवसाय भी बन गयी है। कविता जीवन्तता और विविधता का अद्भुत दस्तावेज है। यह लघु

कविता आज खूब चर्चित हो रही है और वर्तमान में सबसे चर्चित विधा के रूप में हाइकु स्थान लेता जा रहा है। हाइकु अपनी लघुता की कसौटी पर खरी उतरती है। त्रिलोचन शास्त्री का कथन है–'हाइकु एक बड़ी कला है। इसके अन्दर से एक पूरी कविता का अहसास मिलना चाहिए। [12] हाइकु कविता में 5–7–5 अक्षर का अनुशासन जरूरी है और एक भी शब्द व्यर्थ नहीं होना चाहिए। आज हाइकु का क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है। विभिन्न विधाओं में हाइकु की रचनाओं को आज स्थान दिया गया है–हाइकु नवगीत, हाइकु मुक्तक, हाइकु रूबाई, हाइकु दोहे, हाइकु गज़ल आदि। हाइकु लेखन में हिन्दी में खूब प्रयोग हुए डॉ0 रामेश्वर काम्बोज 'हिमांशु' नें 'त्रिवेणी' नाम से एक इंटरनेट पत्रिका भी प्रकाशित की है। नित नये हाइकु एवं हाइकुकार उभर कर आ रहे हैं।

उद्देश्य———— लिखे

निष्कर्ष

समग्र रूप से हम कह सकते हैं, कि 21वीं शताब्दी में संचार माध्यम नये विकास की ऊँचाइयों को स्पर्श कर रहा है। सूचना क्रान्ति के इस नवयुग नें आदान प्रदान की नवीनता को तीवृता प्रदान की है। भारतीय संचार जगत में हिन्दी भाषा नें 'बाजार' और 'कम्प्यूटर' दोनों की भाषा के रूप में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। जिससे हमारी हिन्दी भी नित नूतन चुनौतियों का सामना करने के लिए सर्व शक्ति सम्पन्न हो गई है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. हाइकु पत्र – 1 फरवरी 1978।
2. त्रिशूल 'अपनी बात', 7 दिसम्बर 1987।
3. प्रो0 सत्यनारायण वर्मा, जापानी कविताएँ, पृ0–29।
4. पुष्प कलिका/ले आती है अरण्य का/विपुल आश्वास।
5. अज्ञेय, अरी ओ करूणा प्रभामय, पृ0 – 76।
6. सं0 – कमलेश भट्ट 'कमल' – हाइकु 1999 पृ0 – 22।
7. भूल चॉदनी/मोगरे के कुंज में/चुनरी स्व की।
1ण सोनेरी चॉद रूपेरी सूरज, अनुवाद – डॉ0 भगवत शरण अग्रवाल।
8. टुकड़े टुकड़े आकाश, डॉ0 भगवत शरण अग्रवाल, पृ0 – 30।
9. अकह, डॉ0 भगवत शरण अग्रवाल, पृ0 – 40।
10. 'हाइकु – 1999' कमलेश भट्ट 'कमल' पृ0 – 48।
11. डॉ0 सुधा गुप्ता, खुशबू का सफर, पृ0 – 44।
12. सत्यपाल चुघ, सूर्य और सीकरी, पृ0 – 6।